शुरुआती जीवन के प्रमाण हैं जीवाश्म

प्रमोद भार्गव

दुर्लभ व पूरी तरह विलुप्त हो चुके जीव व वनस्पति जगत का साक्षात प्रमाण देश के वे जीवाश्म राष्ट्रीय उद्यान हैं, जिनमें आज भी जीवाश्मों के नमूने मौजूद हैं। ये जीवाश्म प्राणी जगत के अतीत एवं मानव विकास की सिलसिलेवार गाथा के साक्षी हैं। लेकिन यह देश का दुर्भाग्य है कि हम दुनिया में अद्वितीय व विलक्षण मानी जाने वाली इस भूवैज्ञानिक धरोहर का पर्याप्त सरंक्षण नहीं कर पा रहे हैं। फलस्वरूप एक ओर जहां यह अनमोल विरासत तस्करी की भेंट चढ़ रही है वहीं दूसरी ओर प्रशासनिक लापरवाही व उदासीनता के कारण इन जीवाश्मों का क्षरण भी हो रहा है। इस कारण यह पुरातात्विक निधि अस्तित्व का संकट झेल रही है।

वाराणसी सोनभद्र राष्ट्रीय राजमार्ग पर राबर्ट्सगंज से आगे विजयगढ़ का मशहूर किला है। प्रसिद्ध उपन्यासकार बाबू देवकीनंदन खत्री के उपन्यास चंद्रकांता की अमर प्रेम कथा इसी गढ़ की भूलभूलैया और सोन घाटी कहे जाने वाले इसी भूक्षेत्र की आदिम गुफाओं में परवान चढ़ी। यहीं सलखन नाम से विख्यात भूखण्ड है। भूवैज्ञानिकों व जीवाश्म वैज्ञानिकों का मानना है कि यहां 150 करोड़ वर्ष पुराने जीवाश्म मौजूद हैं। इन जीवाश्म व शैलचित्रों के संरक्षण के लिए ही सोनभद्र जीवाश्म उद्यान बनाया गया है। यहां धरती पर आकार ले चुके जीव-जन्तुओं, कीड़े-मकोड़ों व वनस्पतियों के अनेक बिरले जीवाश्म उपलब्ध हैं।

5 दिसम्बर 2002 को जब यहां कनाडा के विश्व विख्यात भूवैज्ञानिक जे. हॉफमैन आए तो 150 करोड़ साल पुराने जीवाश्मों को देखकर हैरान रह गए। इस जीव की स्पष्ट छवि चट्टान पर अंकित देखकर उन्होंने दावा किया था कि इस जीवाश्म उद्यान के समक्ष अमेरिका के येलोस्टोन नेशनल पार्क के जीवाश्म भी कमज़ोर हैं। वैसे 1933 में अंग्रेज़ भूगर्भ शास्त्री, जो जिओग्राफिकल सर्वे ऑफ इण्डिया के महानिदेशक भी थे, का मानना था कि सोनभद्र के जीवाश्म येलोस्टोन पार्क के जीवाश्मों से भी प्राचीन व महत्त्वपूर्ण हैं। इसके बावजूद प्रदेश के वन व पुरातत्व विभाग इन जीवाश्मों के संरक्षण की दिशा में गंभीर नहीं हैं। चट्टानों पर प्राकृतिक रूप से उत्कीर्ण नमूनों को बड़ी सफाई से निकाला जा रहा है, ताकि ये पूंजीपतियों की बैठकों में सजावट का हिस्सा बन सकें।

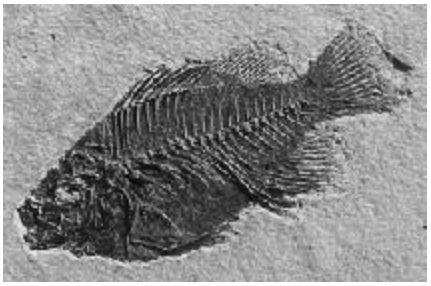

जीवाश्म अर्थात जीव व वनस्पति जगत के ऐसे अवशेष जो चट्टानों की परतों में दबे जीव व वनस्पतियों के हूबहू निर्जीव प्रतिरूप हैं। इनका मिलना दुर्लभ घटना है। भारत में जीवाश्म की पहली खोज 1721 में युरोपीय प्रकृति प्रेमी एम. सोनेरत ने की थी। डार्विन के विकास सिद्धांत का प्रमुख आधार भी कपियों के जीवाश्मों की कड़ी है।

सलखन, जटाशंकर व बरगवां में जो जीवाश्म मिले हैं वे शैवाल के जीवाश्म हैं। इन्हें स्ट्रेमेटोलाइट कहा जाता है। सोनभद्र के जीवाश्म धरती के शुरुआती काल के नील हरित शैवाल (ब्लू ग्रीन एल्गी या सायनो बैक्टीरिया) और समुद्री जल में घुले कैल्शियम व कार्बन डाईऑक्साइड की अंतर्क्रिया से बनने वाली सरंचनाएं हैं। जीवन की उत्पत्ति और विकास से जुड़े इन जीवाश्मों में कुछ जीव वैज्ञानिकों को जीवन की उम्मीद भी है। यदि वैज्ञानिक इनकी कोशिकाएं लेकर क्लोन पद्धति से इन जीवाश्मों में प्राण डालने में कामयाब हो जाते हैं तो पृथ्वी पर 150 करोड़ साल पहले अस्तित्व में रहे जीव-जंतुओं को पुनर्जीवित किया जा सकेगा।

सोनभद्र में इन जीवाश्मों की उपस्थिति से साबित होता है कि करोड़ों साल पहले इस क्षेत्र में समुद्री लहरों की पहुंच थी। भूस्खलन जैसी बड़ी प्राकृतिक आपदा के चलते समुद्र की भौगोलिक स्थिति बदली और भूस्खलन की हलचल से चट्टानों की परतों की चपेट में जो जीव-जंतु व वनस्पति आ गए उनके उपलब्ध अवशेषों को आज हम जीवाश्म के रूप में जानते हैं। इन जीवाश्मों का संरक्षण ज़रूरी है।

मध्यप्रदेश के शिवपुरी ज़िले की पत्थर खदानों में भी बड़ी तादाद में पेड़-पौधे के जीवाश्म अक्सर मिलते रहते हैं। ये जीवाश्म सफेद फर्शी पत्थरों को चीरने पर अनायास ही

निकल आते हैं। इस लेखक ने दुर्गम खदान क्षेत्रों से कुछ अद्‌भुत जीवाश्मों की श्रृंखला खोजकर अपने घर की दीवारों पर चित्र श्रृंखला के रूप में सजाई हुई है। यहां की खदानों में इतने विविध व विचित्र किस्म के जीवाश्म निकलते हैं कि इनका एक पूरा ऐसा संग्रहालय बन सकता है जो भूगर्भ शास्त्रियों और पुराजीव विज्ञानियों के अध्ययन के उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में स्थापित हो सकता है। लेकिन राजनीतिक व प्रशासनिक स्तर पर इस दिशा में अब तक कोई पहल नहीं हुई है। इन जीवाश्मों को लकड़ी की चौखट में सजाकर भेंट करने की परंपरा ज़रूर चल निकली है। नतीजतन ये जीवाश्म भोपाल के ज़्यादातर आला अफसरों के घरों में देखने को मिल जाते हैं। अलग से संग्रहालय बनाना एक बड़ा काम है, इसलिए फिलहाल इतना तो किया ही जा सकता है कि यहां के ज़िला पुरातत्व संग्रहालय में उपलब्ध जीवाश्मों की एक दीर्घा ही बना दी जाए। अन्यथा प्रकृति की यह दुर्लभ वैज्ञानिक धरोहर नष्ट होती रहेगी। ***(स्रोत फीचर्स)***